Introduction

विषय-प्रवेश

भारतीय वांड्मय में रामचरित्र को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। चारित्रिक पूर्णता और मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा भाव को उद्घाटित करने की अद्भुत क्षमता होने के कारण इस एक ही चरित्र के माध्यम से सामाजिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आदर्शों की सफल अभिव्यक्ति सम्भव हो सकी। उनके उदात्त तथा प्रेरक चरित्र की व्यापकता का जो स्वरूप आदि कवि वाल्मीकि द्वारा भारतीय जन मानस के सम्मुख आया वह भारतीय जीवन दर्शन, तत्वज्ञान तथा चिन्तन के क्षेत्र में इतना स्पृहणीय बन गया कि उसमें विश्व मानव के अन्त:करण की अभिव्यक्ति भी सहज ही सम्भव हो सकी और विश्व साहित्य में राम का गरिमामय चरित्र भारतीय आदर्शों का प्रतीक बन गया। ऐसे व्यापक तथा उदात्त चरित्र को लेकर हिन्दी में जिस काव्य धारा का प्रणयन हुआ उसमें गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित 'रामचरित मानस' सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में सम्मानित हुई। हिन्दी साहित्य में 'रामचरित मानस' की रचना वास्तव में एक ऐतिहासिक घटना थी जिसमें चिन्तन तथा भाव दोनों ही क्षेत्रों में एक अभूतपूर्व क्रान्ति का सूत्रपात किया। 'रामचरित मानस' की इस विशालता के ही कारण हिन्दी रामकाव्य धारा की अन्य कृतियां उसके सम्मुख बौनी सी पड़ गईं तथा उसके खरोज्ज्वल प्रकाश के सम्मुख वे प्रभाहीन होकर मन्द पड़ गईं। परिणाम स्वरूप ऐसी रचनाओं का साहित्यिक अनुशीलन तथा मूल्यांकन भी न हो सका। विद्वानों की इस धारणा ने, कि राम काव्य धारा का महत्व केवल 'रामचरित मानस' से ही है, इस धारा की अन्य कृतियों के अध्ययन के द्वार अवरुद्ध कर दिये।

हिन्दी राम काव्य धारा पर जो अध्ययन प्रस्तुत किये गये हैं उनमें कुछ तो कवि विशेष को लेकर और कुछ इस धारा के ऐतिहासिक स्वरूप को लेकर उसकी विशेषता को प्रकट करने के लिये किये गये हैं। कवि विशेष में महाकवि तुलसीदास तथा आचार्य केशवदास पर ही अधिकांश सामग्री मिलती है। इसी प्रकार कृति विशेष के रूप में भी 'रामचरित मानस' तथा 'रामचन्द्रिका'

का ही विशेष अध्ययन हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से किया गया अनुशीलन भी अत्यल्प ही है। राम काव्य धारा के सैद्धान्तिक अथवा दार्शनिक पक्ष पर जो अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं उन कार्यों में भी प्राय: गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस को ही दृष्टि पथ में रखकर इस धारा की अन्य कृतियों को छोड़ दिया गया है। साम्प्रदायिक भक्ति पर आधारित 'राम भक्ति साहित्य में रसिक भावना' तथा 'राम काव्य में मधुर उपासना' जैसे अध्ययन काव्य धारा की उन रचनाओं को प्रकाश में लाते हैं, जिनका सबंध रसिक भावना से था। ये रचनायें प्राय: मुक्तक कोटि की है। दूसरे विषयगत सीमा के कारण उनमें भी अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का समावेश नहीं हो पाया। इसी प्रकार 'अवध के प्रमुख कवि' में भी इसकाव्य धारा की सभी कृतियों का अध्ययन नहीं हो सका क्योंकि उसकी अध्ययन सीमा केवल अवध के प्रमुख कवियों तक ही सीमित थी जैसा कि उसके शीर्षक से ही स्पष्ट है। इन अध्ययनों के अन्तर्गत उपर्युक्त विषयगत सीमाओं के कारण इस धारा की पुष्कल सामग्री का बहुत बड़ा भाग छूट गया है। विशेषकर प्रबन्धात्मक रचनाओं के खोजने और उनके अनुशीलन का प्रयास सम्भवत: इसलिये भी नहीं हो पाया है क्योंकि एक तो ये रचनायें दुर्लभ रहीं, दूसरे यह पूर्वाग्रह दीर्घ-काल तक चलता रहा कि रामचरित मानस के पश्चात् अवधी में प्रबन्ध काव्य लिखे ही नहीं गये।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की मौलिकता तथा विषय की नवीनता

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूप रेखा का निर्माण किया गया है। मुख्य विषय "हिन्दी के मानसेतर प्रबन्धात्मक राम काव्यों की भूमिका में रघुवंश दीपक का आलोचनात्मक अध्ययन" है। विषय की सीमा के अन्तर्गत, आधुनिक काल तक की पुष्कल सामग्री को ध्यान में रखकर उसे वि० १५०० से १८०० वि० तक के कालखण्ड में आने वाली प्रबन्धात्मक रचनाओं तक ही सीमित रखा गया है जिसमें यद्यपि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रणीत 'रामचरित मानस' को उस पर पर्याप्त कार्य हो चुकने के कारण अध्ययन की सीमा से अलग रखा गया है तथापि उसकी सर्वथा उपेक्षा करना सम्भव नहीं हो सका। हिन्दी राम काव्य धारा की अन्य रचनाओं का अध्ययन 'रामचरितमा

की सर्वथा उपेक्षा करके सम्भव ही नहीं क्योंकि उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में उसकी परवर्ती रचनाओं पर अवश्य पड़ा है। अध्ययन की सीमा में आने वाली इस मानसेतर रचनाओं में प्रबन्धात्मक रचनाओं की संख्या ही इतनी अधिक है और इतना ही नहीं कतिपय रचनायें तो ऐसी महत्वपूर्ण हैं कि वे स्वतंत्र अध्ययन की अपेक्षा रखती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का विषय इसी तथ्य पर आधारित हैजिसका मुख्य प्रतिपाद्य `रघुवंश दीपक` का आलोचनात्मक अध्ययन है। आलोच्य कृति भक्त कवि सहजराम जी की प्रबन्धात्मक रचना है जिसका रचनाकाल अठारहवीं शताब्दी विक्रमीय का अन्तिम दशक है। `रामचरित मानस` के पश्चात् हिन्दी राम काव्य धारा में `रघुवंश दीपक` यद्यपि अत्यन्त महत्वपूर्ण, सशक्त महाकाव्य के कोटि की रचना है तथापि उसका सम्यक् अध्ययन कहीं भी उपलब्ध नहीं है। एक विशाल काय प्रबन्ध काव्य के होते हुये भी उसका उल्लेख कतिपय इतिहास ग्रन्थों तथा खोज विवरणों को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं मिलता और वे उल्लेख भी सर्वथा भ्रम रहित नहीं हैं।

उपर्युक्त प्रकार से विषय के स्पष्टीकरण केसाथ यह उल्लेखनीय है कि `रघुवंश दीपक` तक मिलने वाली मानसेत्तर प्रबन्धात्मक कृतियों की संख्या लगभग ३० है जिनमें से कुछ को छोड़कर शेष अब तक अप्रकाशित हैं। हिन्दी राम अधिकांशत: अवधी में है और उसमें भी दोहा, चौपाई तथा विविध छन्दों के सुष्ठु प्रयोग मिलते हैं किन्तु कृतियों से अपरिचित रहने के कारण उनमें प्रयुक्त अवधी के भाषा सामर्थ्य का परिचय न तो सामान्य पाठक को ही हो पाया है और न प्रबुद्ध साहित्यिक अध्येताओं को ही उसका आनन्द प्राप्त हो सका। प्रस्तुत अध्ययन में इस अभाव को लक्ष्य करके उपलब्ध प्रबन्धात्मक रचनाओं का परिचय भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अवधी के संबंध में कतिपय विद्वानों का यह मत भी प्रचलित हो गया था कि `रामचरित मानस` जैसी सशक्त तथा श्रेष्ठ रचना होते हुये भी अवधी की साहित्यिक प्रगति अवरुद्ध हो गई जबकि ब्रज भाषा निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ती रही। अत: प्रस्तुत अध्ययन उक्त भ्रान्त धारणा को भी निर्मूल सिद्ध करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसप्रकार राम काव्य धारा के एक महत्वपूर्ण काव्य रूप एवं अवधी की काव्य परम्परा के व्यापक किन्तु उपेक्षित तथ्य को प्रस्तुत करने वाले इसअध्ययन की मौलिकता एवं नवीनता स्वयं सिद्ध है।

अध्ययन की सीमा में आने वाली दुर्लभ किन्तु महत्वपूर्ण कृतियां अधिकांशत: अप्रकाशित और मन्दिरों, मठों तथा शोध संस्थानों में अपरिचित सी पड़ी हुई हैं। बहुत सी कृतियां तो काल के थपेड़ों से इतनी जर्जर हो गई है कि यदि उनकी शीघ्र ही व्यवस्था न की गई तो उनका अस्तित्व या तो दीमकों के उदरस्थ हो जायेगा या फिर उनमें प्रयोग किया गया कागज़ ही टुकड़े-टुकड़े होकर उनके अस्तित्व का लोप कर देगा। अनेक स्थानों से ऐसी कृतियों को प्राप्त करना तो दूर की बात है देखने तक का अवसर उनके संरक्षक बड़ी कठिनाई से प्रदान करते हैं। इनमें छिपी मूल्यवान रत्नराशि दफ्ती के पुट्ठों और मोटे कपड़ों से आवेष्टित है और कई बार वे इतनी ही सहायता कर पाते हैं कि जिज्ञासु अध्येता उन्हें दूर से प्रणाम मात्र कर सके। अत: साधनों और क्षमता की सीमाओं में रहकर विषय की परिधि में आने वाली जिन रचनाओं को प्राप्त किया जा सका है उन्हें प्रस्तुत अध्ययन में स्थान दिया गया है क्योंकि इस अछूती तथा महत्वपूर्ण सामग्री को हिन्दी जगत के समक्ष नम्रभाव से प्रस्तुत करने के लोभ का संवरण लेखक नहीं कर पा रहा है।

ज्ञान के विस्तार में प्रस्तुत अध्ययन का योगदान

प्रस्तुत शोध कार्य को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय भारतीय वाङ्मय में राम काव्य की विशेषता तथा हिन्दी राम काव्य धारा के विवेचन से संबंधित है। यद्यपि इस दिशा में अनेक विद्वानों ने विचार किया है किन्तु यहां पर इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर रामकाव्य की विशेषताओं पर विचार किया गया है कि वे कहां तक प्रबन्ध काव्यों के सर्जन की प्रेरणा देने का कार्य करती हैं। इस दृष्टिकोण को अपना कर तत्संबंधी अध्ययन को पांच शीर्षकों द्वारा प्रस्तुत किया गया है -

१- भारतीय जीवन दर्शन की सफल प्रतिष्ठा

२- अभ्युदय और नि:श्रेयस् का अपूर्व समन्वय

३- मानवता की उदात्त भावना

४- वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन से समन्वित लोक धर्म की सफल अभि

५- विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग

विशेषताओं के अनुशीलन में भारतीय जीवन धारा पर उनके प्रभाव तथा युग जीवन की अभिव्यक्ति आदि को भी यथास्थान निर्दिष्ट करना भी लेखक ने आवश्यक समझा है। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि राम का व्यक्तित्व जीवन के विविध पक्षों से सम्बद्ध होकर जहां एक और व्यापक जीवन दृष्टि को उद्घाटित करता है वहां दूसरी और विविध काव्य शैलियों में प्रवाहित होने वाली यह काव्य धारा अनुभूति के क्षेत्र को सदैव सरस बनाती आयी है। तदनन्तर हिन्दी की राम काव्य धारा पर विचारकरने से पूर्व सर्व प्रथम संस्कृत,प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में राम काव्य धारा की संक्षिप्त चर्चा की गई है जिसके अन्तर्गत राम कथा की विविध भूमियों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है।इस अनुशीलन के अन्तर्गत बाल्मीकि रामायण मेंप्राप्त कथाओं के अतिरिक्त साहित्यिक काव्यों और अन्य रामायणों में प्राप्त होने वाली कथाओ की चर्चा विशेष कर इस कारण की है क्योंकि हिन्दी केअनेक प्रबन्धात्मक राम काव्यों में उनका संयोजन मिलता है। इस विवेचन केआधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारे आलोच्य प्रबन्ध काव्यों पर पूर्ववर्ती काव्य परम्परा तथा कथावस्तु के विविध स्त्रोतों का कितना गहरा प्रभाव पड़ा है।हिन्दी की राम काव्य परम्परा के विवेचन में विशेषकर प्रबन्धात्मक रचनाओं को दृष्टिपथ में रखकर रघुवंश दीपक की पूर्व पीठिका को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस विवेचन मेंलेखक ने अब तक के अध्ययन को आधार बनाया है जिसके साथ ही उसने अनेक स्त्रोतों से सूचनायें एकत्र की हैं, किन्तु अध्ययनगत निष्कर्ष लेखक के अपने निजी हैं । एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि लेखक ने पहले पहल इस परम्परा में कुछ प्राचीन कृतियों की सर्वथा नवीन सूचनायें भी यहां प्रस्तुत की हैं।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्यों का वर्गीकरण तथा उपलब्ध रचनाओं का अनुशीलन किया गया है।इसके अन्तर्गत कृतियों का वर्गीकरण निम्नांकित आधार पर किया गया है ।

(१) काव्य रूपों के आधार पर

(क) महाकाव्य (ख) खण्ड काव्य

(२) शैली के आधार पर -

(क) पद शैली (ख) दोहा चौपाई (ग) कवित्त सवैया

(घ) विविध छन्द

(३) प्रयोजन तथा उद्देश्य के आधार पर

(क) भक्ति विषयक (ख) साहित्यिक (ग) युगीन चेतना की अभिव्यक्ति

(४) वस्तु सगंठन के आधार पर -

(क) पौराणिक ~~(ख) [illegible]~~ (ख) पात्र के आधारपर

(ग) घटना प्रधान

तदनन्तर उन उपलब्ध रचनाओं का परिचय प्रस्तुत किया गया है जो हमारे अध्ययन की परिधि के अन्तर्गत आती हैं। इस विवेचन में प्रकाशित अप्रकाशित कृतियों का अनुशीलन प्रस्तुत हुआ है जिसके साथ ही उनके रचयिताओं, रचनाकाल तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख करते हुये उनके साहित्यिक महत्व को स्पष्ट करने का भी प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि अनेक कृतियां युग गत परिस्थितियों और युगबोध से भली भांति सम्पृक्त हैं और इस कारण उनके शिल्प तथा उद्देश्य में अनेकरूपता है। इस प्रकार द्वितीय अध्याय का सम्पूर्ण विवेचन लेखक का अपना मौलिक निजी प्रयास है जिसकी आधार भूत सामग्री प्रकाशित एवम् अप्रकाशित रचनायें हैं। इसके साथ ही लेखक ने शोध यात्राओं से भी सामग्री प्राप्त करने का यथावश्यक-यथासम्भव प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय का मुख्य विषय रघुवंश दीपक और उसके रचयिता के विवेचन से सबंधित है। सर्व प्रथम प्रबन्धात्मक रामकाव्यों की परम्परा के सन्दर्भ में, रघुवंश दीपक के संक्षिप्त परिचय के पश्चात् उसके रचना काल और रचना स्थल का अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। ये दोनों ही तथ्य ग्रन्थ के अन्तर्साक्ष्य पर आधारित हैं अत: यह सामान्यतया संक्षेप में ही प्रस्तुत करके 'रघुवंश दीपक' के कवि सहजराम जी की जीवनी का अध्ययन अन्त: एवं वाह्य साक्ष्यों के आधार पर किया गया है। प्रामाणिक जीवन की खोज के लिये लेखक ने साहित्यिक

सामग्री के अतिरिक्त उन स्थानोंकी अनेक बार यात्रा करके पुष्कल सामग्री भी एकत्र की है जो कि उनके जीवन से सबंधित रहे हैं। एकत्र सामग्री के परीक्षण एवंविवेचन द्वारा प्रामाणिक जीवनी को यथा सम्भव प्रकाशित किया गया है। इसके उपरान्त प्रस्तुत रचना के मूल, रचना के उद्देश्य तथा उसकी नवीनता पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। कवि के कृतित्व की नवीनता और मौलिकता के विवेचन से लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि प्रस्तुत कृति में कथावस्तु में मौलिक उद्भावनायें, चरित्र चित्रण में नवीन तथ्योंका समावेश विषाय गत मौलिकता तथा शैली गत नवीनता आदि की विशेषतायेंमिलती हैं । इसमें आवश्यकतानुसार रामचरित मानस के साथ स्थान-स्थान पर तुलना प्रस्तुत करते हुये नवीन तथ्यों को प्रकाश मेंलाने का प्रयास किया गया है क्योंकि कवि ने अनेक स्थलों पर उक्त प्रभाव को स्वयं ही स्वीकार किया है। इस अध्याय का विवेचन भी लेखक का अपना निजी मौलिक प्रयास है जिसकी आधारभूत सामग्री ,रघुवंश दीपक से सबंधित है । रघुवंश दीपक के वस्तु विन्यास को प्रस्तुत करने वाले चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत कृति की कथावस्तु पर विचारकिया गया है। इस अनुशीलन द्वारा वस्तु सगंठन में कवि का कौशल तथा उसकी रचनात्मक प्रतिभा का निरूपण भी हुआ है। इस विवेचन में आधिकारिक और प्रासंगिक कथाओं के संयोजन में कवि की सफलता तथा असफलता का परीक्षण एवं मूल्यांकन हुआ है। यह अध्ययन भी लेखक का अपना मौलिक प्रयास ही है ।

पंचम अध्याय का अध्ययन रघुवंश दीपक की प्रबन्धात्मकता तथा उसके महाकाव्यत्व से सबंधित है। प्रबन्ध काव्य की परिभाषा उसके आवश्यक तत्व तथा अनिवार्य अंगों पर विभिन्न दृष्टिकोण तथा विद्वानों के विवेचनो के आलोक में विचार किया गया है। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य के रूप में ' रघुवंश दीपक ' के रूप विकास पर विस्तार सहित विचार किया गया है। कृति के वस्तु विन्यास पर पूर्ववर्ती अध्याय केअन्तर्गत विचारकिया जा चुका था अत: यहां पर आधिकारिक और प्रासंगिक कथाओ के संगुम्फन तथा सम्बन्ध

निर्वाह पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त महाकाव्यत्व पर विचार करते समय चरित्र सृष्टि, भाव व्यजंना उद्देश्य तथा शैली आदि पर विस्तार सहित विचार किया गया है। महाकाव्योचित वस्तुवर्णन, मार्मिक तथा गम्भीर प्रसंगों की संरचना, तथा युगीन चेतना में कवि की प्रबन्ध पटुता का परीक्षण किया गया है। अध्ययन गत विवेचन मेंप्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व के स्पष्टीकरण के लिये पूर्ववर्ती विवेचनों से सहायता ली गई है किन्तु उनसे प्राप्त निष्कर्षों के आधारपर 'रघुवंश दीपक' की प्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व का विवेचन लेखक का अपना निजी मौलिक प्रयास है ।

प्रबन्ध का सप्तम् अध्याय 'रघुवंश दीपक ' के कला सौष्ठव को प्रस्तुत करता है। सर्व प्रथम कवि के काव्य विषयक दृष्टिकोण के स्पष्टीकरण के पश्चात् उसकी काव्य कला के विविध पक्षों का उद्घाटन सम्पूर्ण अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। इस विवेचन में काव्य शैली , भाव व्यंजना और उसका शिल्प भाषा,अलंकार छन्द विधान आदि पर विचार करते हुए अन्त में कृति का समग्रतया मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि यह काव्य 'रामचरित मानस ' की काव्य चेतना का अनुगामी है और यद्यपि काव्यगत उत्कृष्टता की दृष्टि से उस कोटि की रचना नहीं कही जा सकती तथापि इसपरम्परा में आने वाली अन्य अनेक रचनाओं में इसका महत्व अत्यधिक है। तुलसी की सी कला प्रतिभा न पाकर भी सहजराम जी का यह कृतित्व उपेक्षणीय नहीं कहा जा सकता ,प्रत्युत उनके पश्चात् आलोच्य कवि कोही इस धारा के कवियों में स्थान दिया जा सकता है।इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि यह रीतिकाल की रचना है अत: रीतिकालीन परिप्रेक्ष्य मे भी इसके कला सौष्ठव पर विचार करना यहां आवश्यक माना गया है। अत: सप्तम अध्याय का विवेचन भी लेखक की मौलिक उपलब्धि है ।

अष्टम् अध्याय में 'रघुवंश दीपक ' में व्यंजित भक्ति का स्वरूप तथा उसमें अभिव्यक्त दार्शनिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है। सहजरामजी की वैयक्तिक उपासना पर रसिक भावना का प्रभाव था किन्तु दूसरी ओर वे

गोस्वामी तुलसीदास जी की भक्ति पद्धति से अत्यधिक प्रभावित थे । अत: सर्व प्रथम इसके स्पष्टीकरण में सम्भावनाओं को प्रकाशित करने के उपरान्त `रघुवंश दीपक` में व्यंजित भक्ति भावना का विवेचन किया गया है। इसके निष्कर्ष रूप में उपर्युक्त द्विविध प्रभावों की अवस्थिति का निरूपण भी लेखक ने आवश्यक माना है। दूसरा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि सहजराम के इस काव्य में रसिक भावना की झलक अलग से भी दिखाई देती है जिसको लेखक ने उनकी निजी भक्ति चेतना से प्रभावित माना है। `रघुवंश दीपक` में रामचरितमानस की भांति दार्शनिक सिद्धांतों का निरूपण और कहीं कहीं उनका सामान्य निर्देशन भी अनेक स्थानों पर मिलता है। अत: ऐसे प्रसंगों पर अलग अलग विचार करके अन्त में समग्र रूप से कवि की दार्शनिक मान्यताओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस सम्पूर्ण विवेचन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सहजराम पहले भक्त कवि है और बाद में अन्य कुछ। वे किसी स्वतंत्र दार्शनिक मतवाद के प्रवर्तक न होकर पूर्व कालीन दार्शनिक चिन्तन के यथा प्रसंग प्रस्तुत कर्ता मात्र हैं। यह सम्पूर्ण विवेचन भी लेखक का अपना निजी मौलिक प्रयास है जिसमें अध्ययन के स्पष्टीकरण के लिये यत्र तत्र विद्वानों के विवेचनों से भी सहायता ली गई है।

नवम अध्याय `रघुवंश दीपक` के समग्रतया मूल्यांकन तथा प्रबन्ध के उपसंहार का है। इसमें पूर्ववर्ती अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षों को दृष्टिगत करते हुये नये तथ्यों को प्रकाश में लाकर कृति का साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। इसके अनन्तर इस धारा की कुछ महत्व पूर्ण कृतियों के साथ संक्षेप में कवि के कृतित्व की तुलना की गई है। `राम चरित मानस` और `रामचन्द्रिका` जैसी महत्व पूर्ण कृतियों के साथ इसकी स्वतंत्र तुलना के पश्चात् इस धारा की अन्य प्रबन्ध कृतियों के साथ उसके कृतित्व की तुलना करते हुये उसके महत्व को निरखा-परखा गया है। अत: निष्कर्ष रूप में हिन्दी की प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा मे `रघुवंश दीपक का स्थान निर्धारण किया गया है। प्रस्तुत विवेचन से लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि प्रबन्ध सौष्ठव की दृष्टि से समस्त काव्य धारा में इसका स्थान

'रामचरित मानस' के बाद ही पड़ता है तथा इस समय तक की कृतियों में कला सौष्ठव की दृष्टि से 'मानस' और 'रामचन्द्रिका' के पश्चात् इसके महत्व को निस्संदिग्ध रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

सूत्र रूप में प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियां तथा स्थापनायें - निम्नलिखित हैं -

१- इस अध्ययन द्वारा विक्रमीय सम्वत् अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग तक की लगभग तीस प्रबन्धात्मक कृतियों को प्रकाश में लाकर रामकाव्य धारा की इस पुष्ट परम्परा का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

२-'रघुवंश दीपक' तथा उसके रचयिता की अब तक अज्ञातप्राय: सामग्री को एकत्र करके पहले पहल विद्वज्जगत के समक्ष रखा गया है।

३-'रामचरित मानस' की परवर्ती कालीन अवधी की प्रबन्ध काव्य धारा को सर्वथा शुष्क रूप में दृष्टिगत किये जाने वाले भ्रम का निराकरण भी इस अध्ययन से हो जाता है। अत: अवधी की काव्य परम्परा के विकास की दृष्टि से भी प्रस्तुत अध्ययन का योगदान अपने आपमें महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

४- हिन्दी के प्रबन्धकाव्यों के शिल्प विधान के विकास के अध्ययन में भी इन नवोपलब्ध रचनाओं से सहायता ली जा सकती है।

५- विवेचित रचनाओं में से अनेक पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किये जा सकते हैं और किसी एक महत्वपूर्ण कृति के साथ 'रघुवंश दीपक' का तुलनात्मक अध्ययन भी भविष्य की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को सम्भाव्य बना सकता है।

अस्तु,

प्रस्तुत शोध कार्य की मौलिकता, नवीनता तथा ज्ञान के विस्तार में उसके योगदान के महत्व को, उपरिनिर्दिष्ट तथ्यों के आधार पर निरखने तथा परखने का कार्य विद्वत्समाज के ऊपर छोड़कर अपना नम्र निवेदन समाप्त करता हूँ।

शैलेन्द्रप्रसाद शुक्ल

00000000000